RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा-12 इतिहास

हिंदी माध्यम

ARJUN BATCH

भक्ति सूफी परम्पराएं

Chapter-6 | Part-1

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

mg

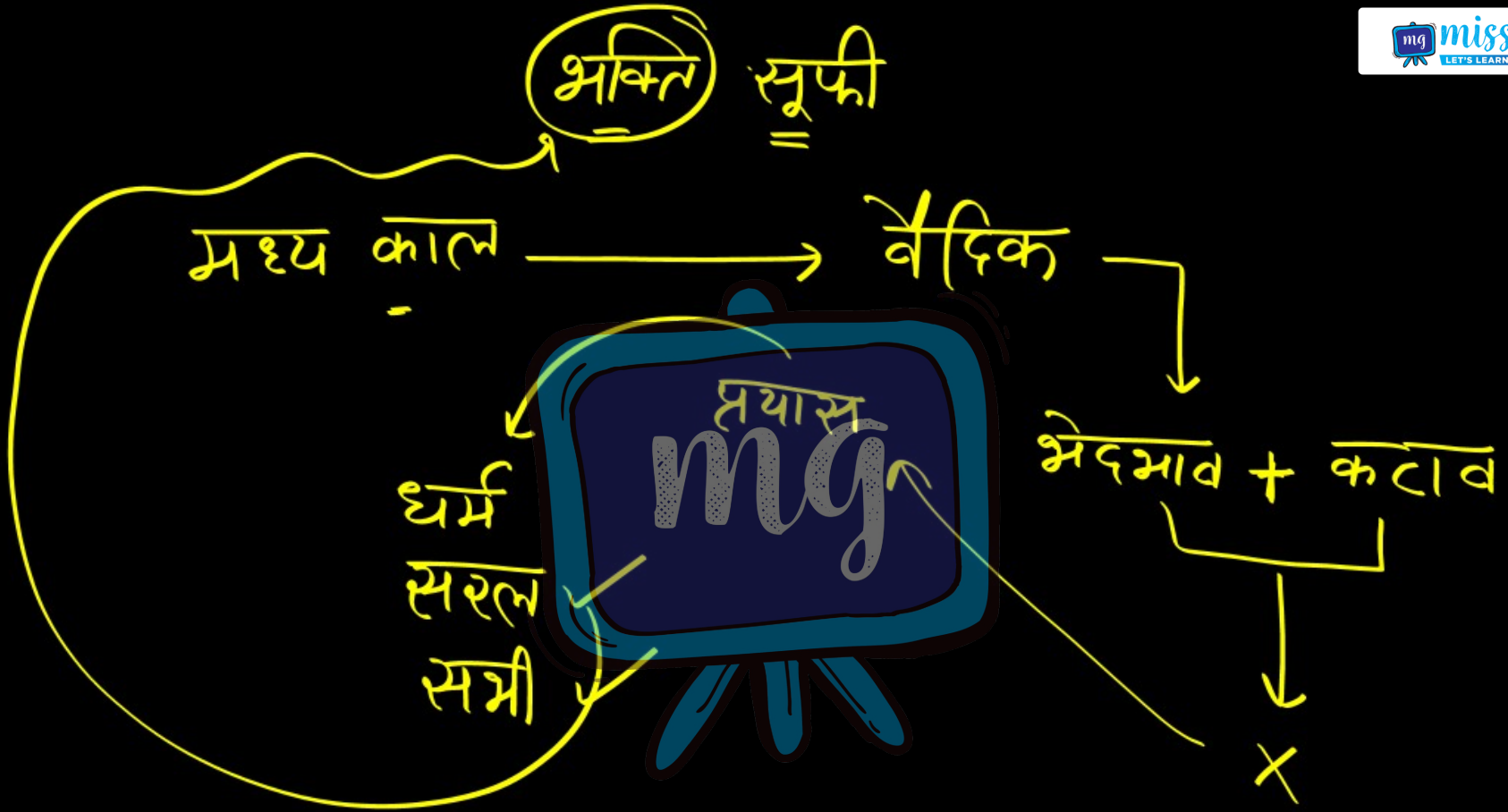

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भक्ति सूफी

मध्य काल → वैदिक

वैदिक → भेदभाव + कटाव → ×

धर्म
सरल ✓
सभी ✓

mg प्रयास

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

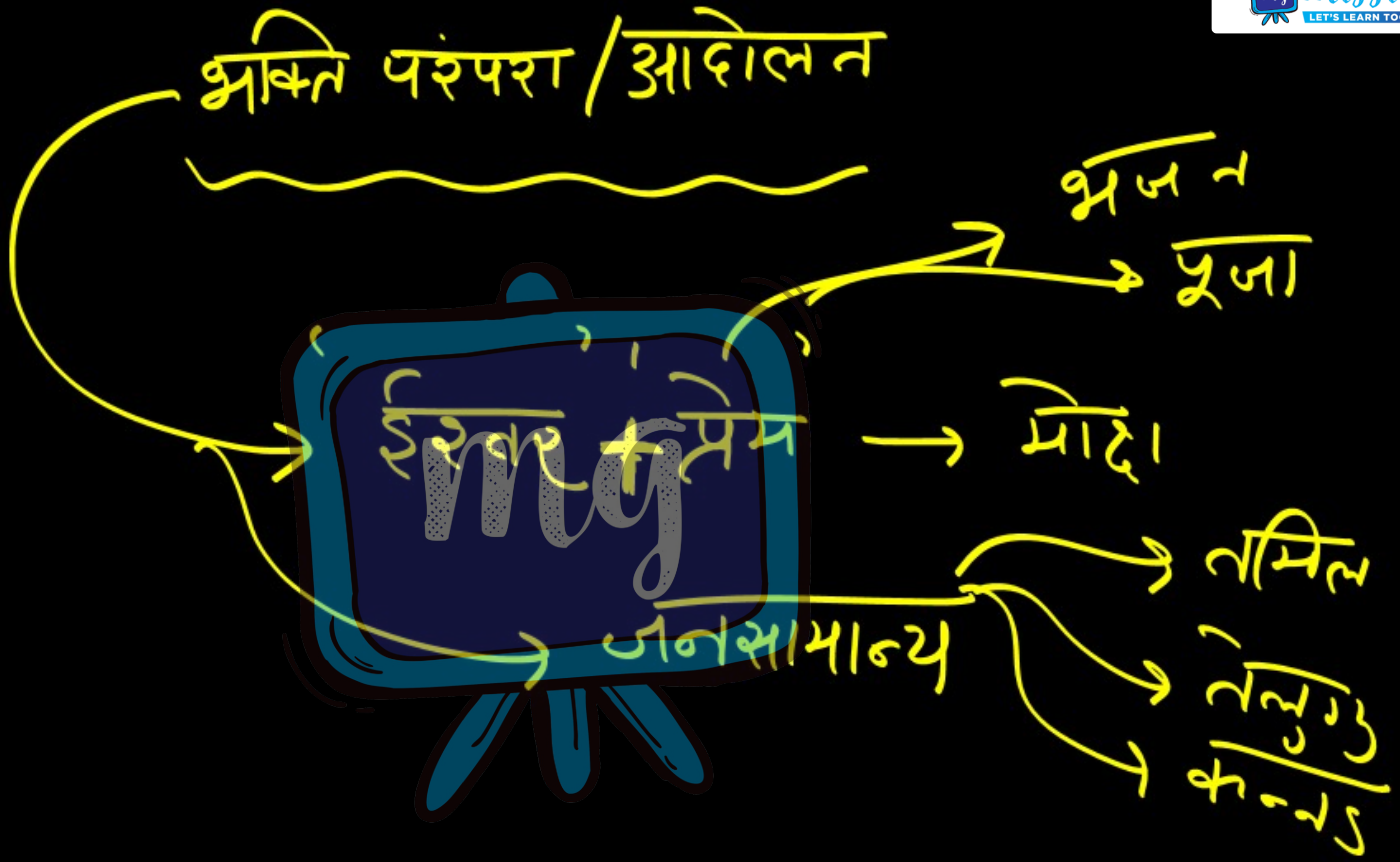

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

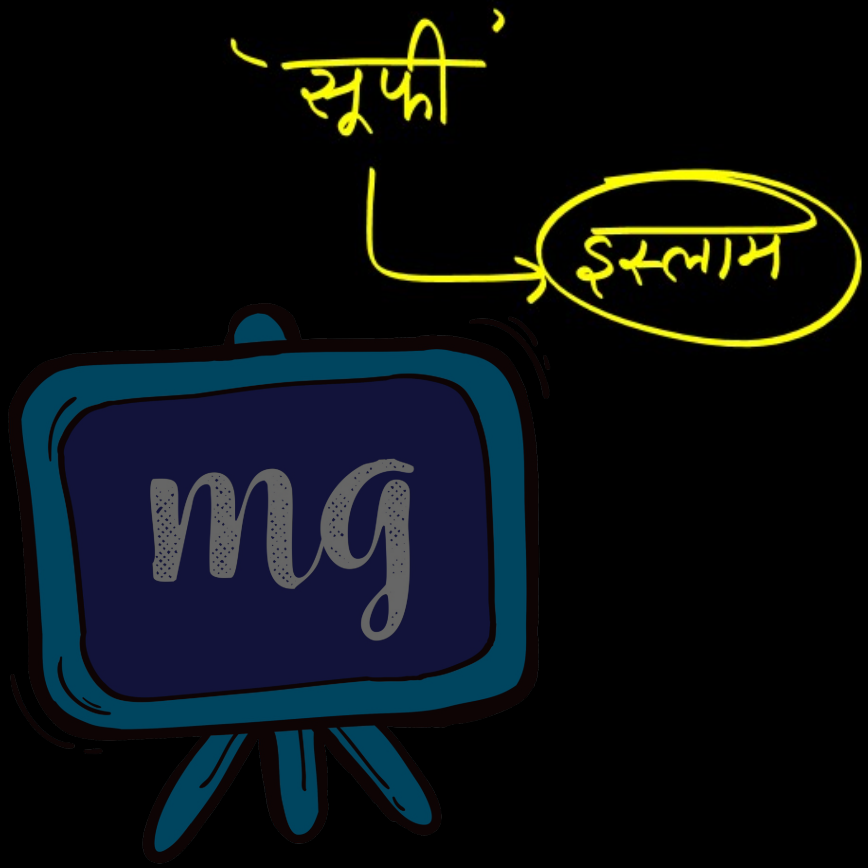

आज क्या पढेंगे ?

1. पूजा प्रणालियों का समन्वय
2. महान व लघु परंपराएँ
3. भेद एवं संघर्ष

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

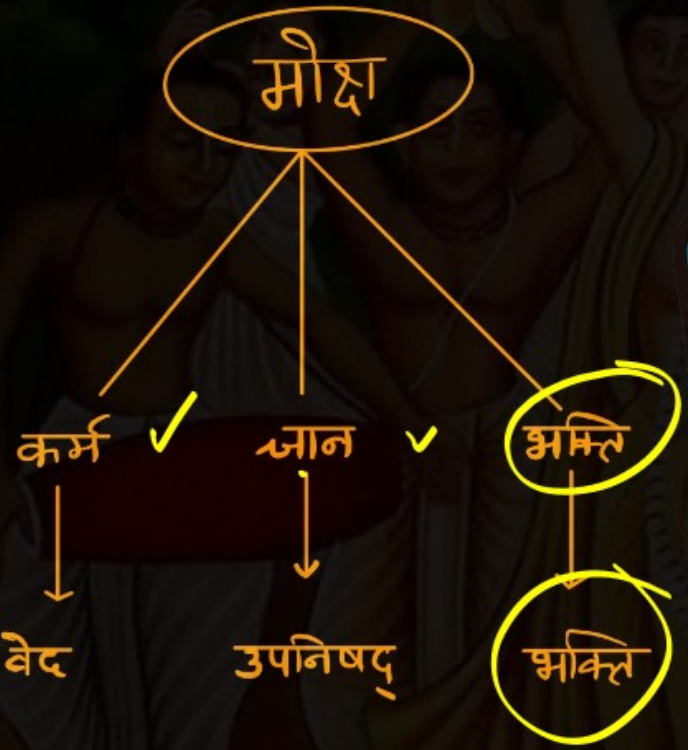

- भारतीय दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्ग – ज्ञान, कर्म, भक्ति बताये गये हैं।
- वेदों में कर्म मार्ग पर बल दिया गया है।
- उपनिषदों में ज्ञान मार्ग पर बल दिया गया है।
- और मध्यकाल में भक्ति मार्ग पर बल दिया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मध्य काल में अनेक ऐसे धार्मिक विचारक हुए जिन्होंने भक्ति को अधिक महत्व दिया एवं धर्म सुधार का एक नया आंदोलन प्रारम्भ किया जो भक्ति आंदोलन के नाम से विख्यात हुआ।

आंदोलन का इतिहास महान धर्म सुधारक शंकराचार्य के समय से आरम्भ होता है जिन्होंने तत्कालीन बौद्ध धर्म को टक्कर देते हुए हिन्दु धर्म को एक ठोस व दार्शनिक आधार पर खड़ा किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

वैदिक बौद्ध शंकराचार्य

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अद्वैतवाद

अ - नहीं
द्वैत - भेद
वाद - सिद्धांत

जीव
ब्रह्म

- इन्होंने अद्वैत दर्शन की स्थापना की एवं मोक्ष के ज्ञान मार्ग पर अधिक बल दिया।
- इस धार्मिक विचारधारा के मुख्य प्रवर्तकों में रामानुज, रामानन्द व उनके शिष्य रैदास, कबीर आदि प्रमुख थे।
- भक्ति आंदोलन के महानतम सन्तों में चैतन्य, नामदेव, तुकाराम, कबीर, नानक थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

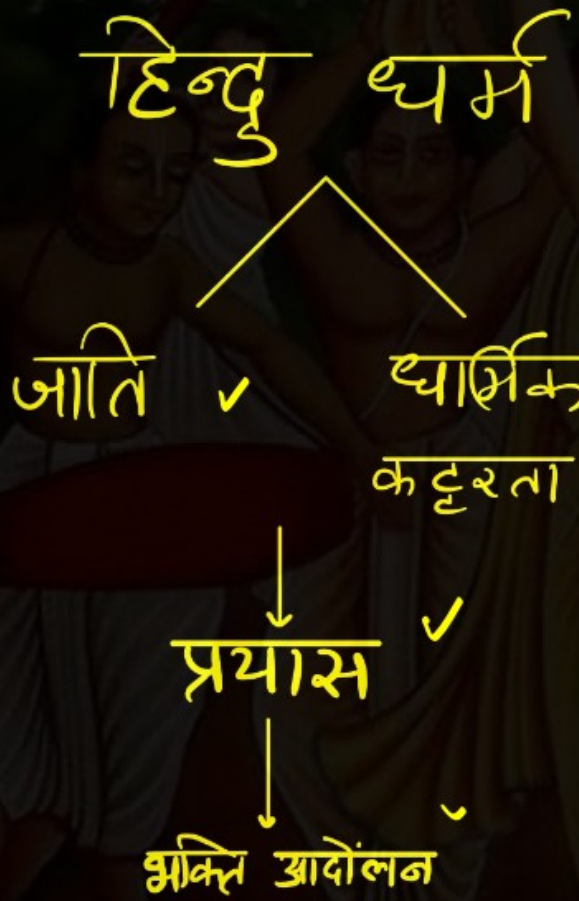

- इन सुधारकों ने हिन्दु धर्म के बाह्यआडम्बरों, जाति-व्यवस्था तथा धार्मिक कट्टरता का विरोध किया एवं हिन्दु धर्म में सुधार का प्रयास किया।
- भक्ति आंदोलन व्यापक था और सम्पूर्ण देश में उसका प्रसार हुआ।
- बौध धर्म के पतन के बाद भारत में इतना व्यापक व लोकप्रिय अन्य कोई आंदोलन नहीं हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

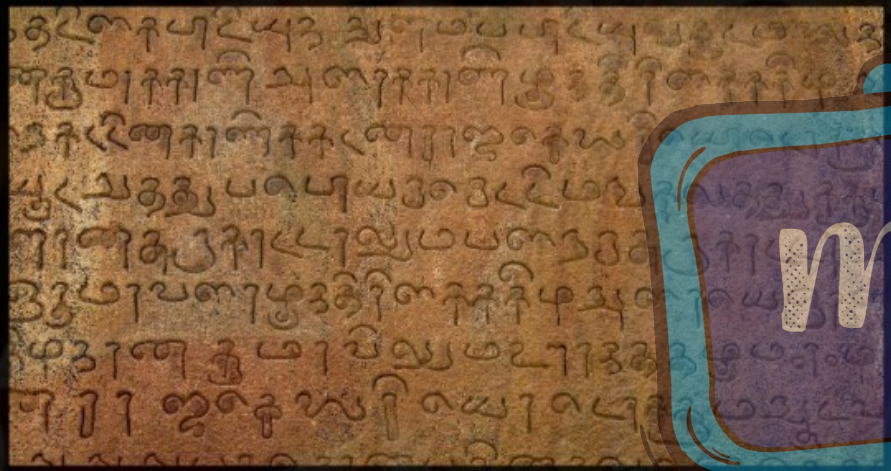

- इस आंदोलन का ठोस परिणाम यह हुआ कि प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य का उत्कर्ष हुआ।
- इन संतों ने जन साधारण की भाषा में उपदेश दिये जिससे हिंदी, बंगाली, मराठी, मैथिल, तमिल, तेलगू आदि भाषाऐं समुन्नत हुई।
- इसी कारण भक्ति आन्दोलन के काल को प्रान्तीय भाषाओं के विकास की दृष्टि से स्वर्णयुग कहा जा सकता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. भक्ति आंदोलन / परंपरा ?

Q. प्रवर्तक / धर्म सुधारक

Q. प्रान्तीय भाषा ?

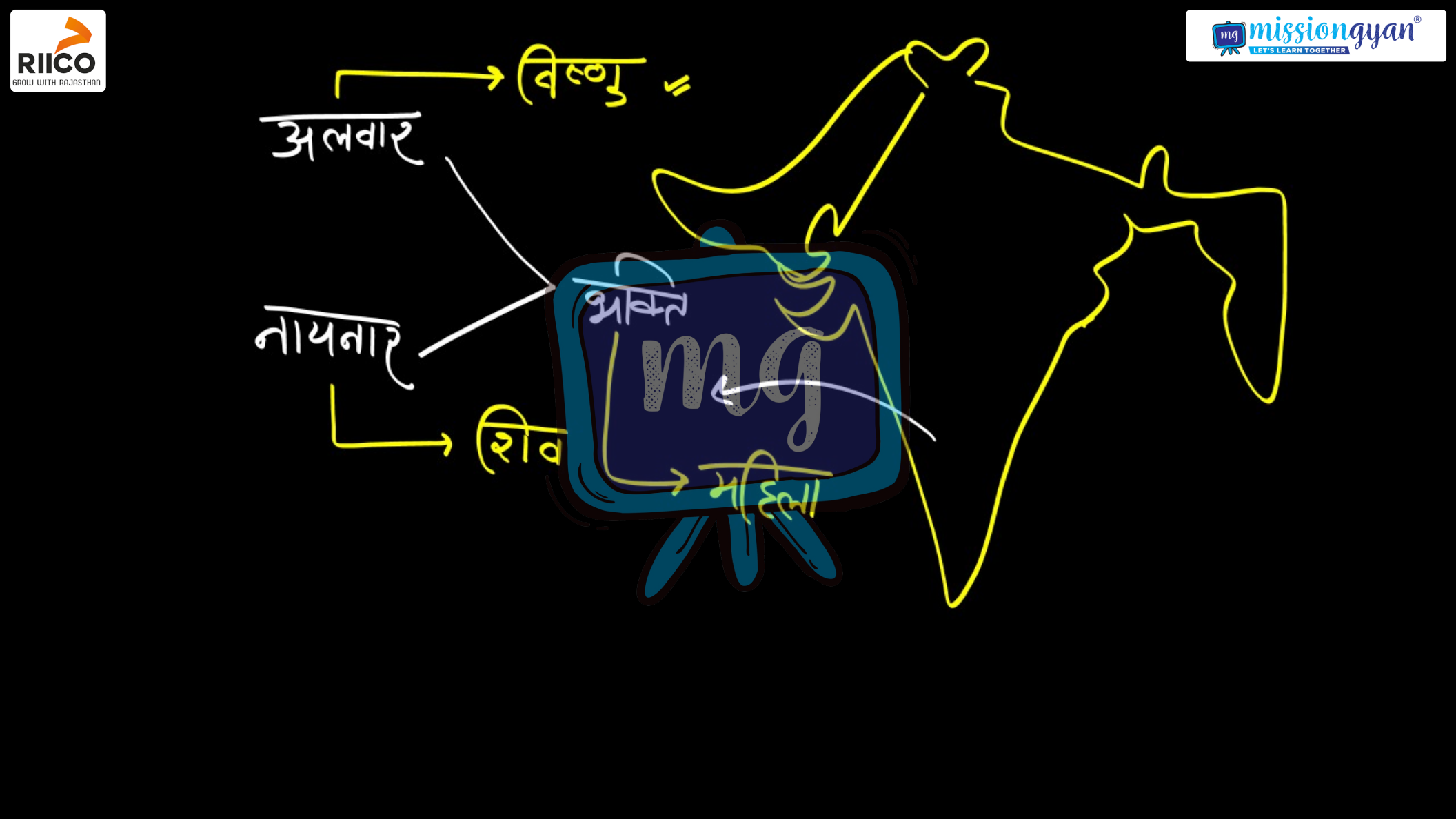

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अलवार → विष्णु

नायनार → शिव

→ महिला

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- भक्ति आन्दोलन का उदय दक्षिण भारत में हुआ।

1. अलवार संत :- ये विष्णु भक्त थे।
   कुल संख्या = 63
2. नयनार संत :- ये शिव भक्त थे।
   कुल संख्या = 12

- इसके बाद भक्ति आन्दोलन महाराष्ट्र में लोकप्रिय हुआ।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- महाराष्ट्र के प्रमुख संत :- ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम।
- उत्तर भारत में संत रामानन्द के द्वारा भक्ति आन्दोलन को लोकप्रिय बनाया गया।
- भक्ति आन्दोलन की दो धाराएँ थी-
  1. निर्गुण भक्ति
  2. सगुण भक्ति

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

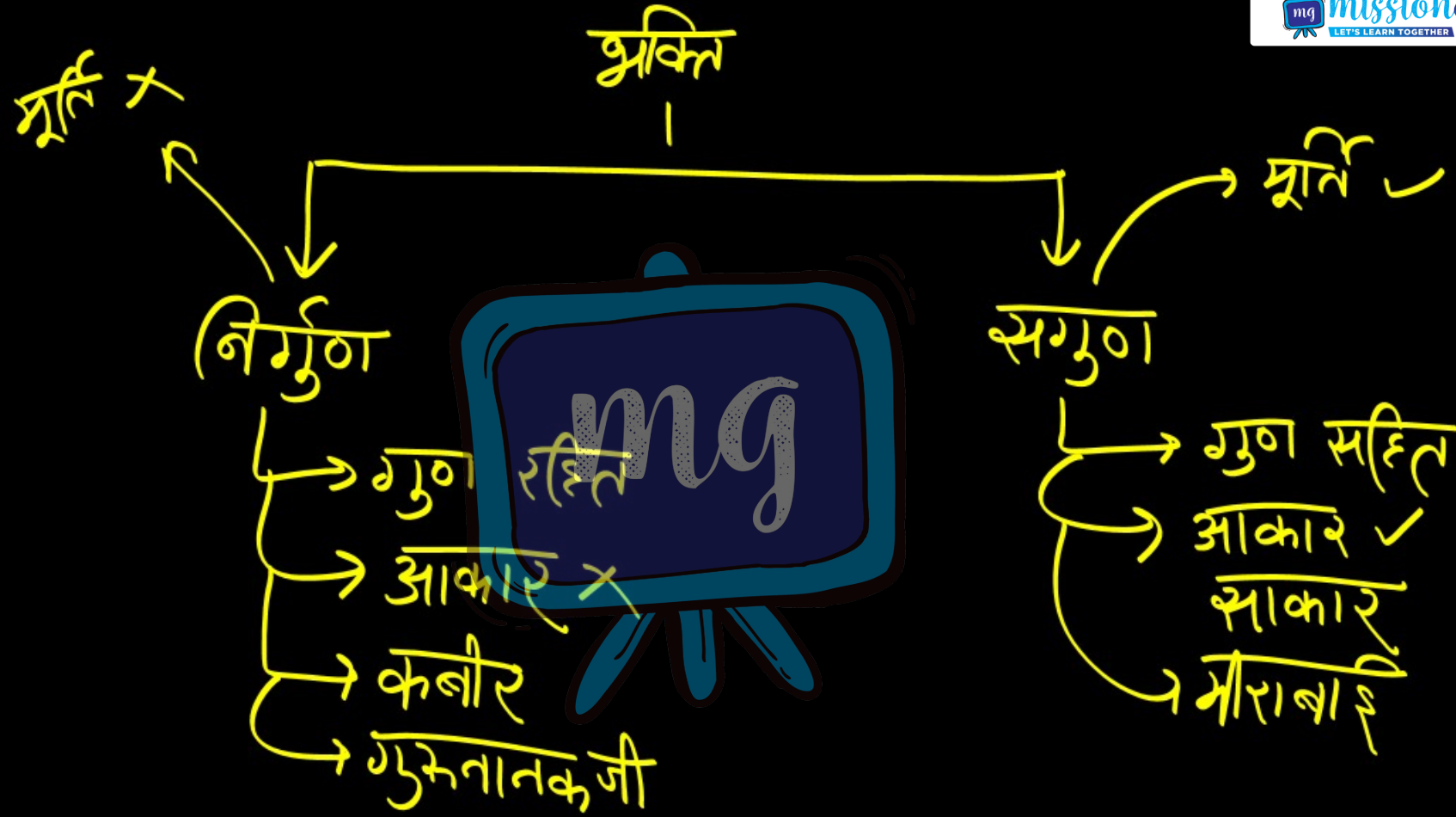

भक्ति आन्दोलन के समानान्तर इस्लाम धर्म में
सूफी आन्दोलन चला।

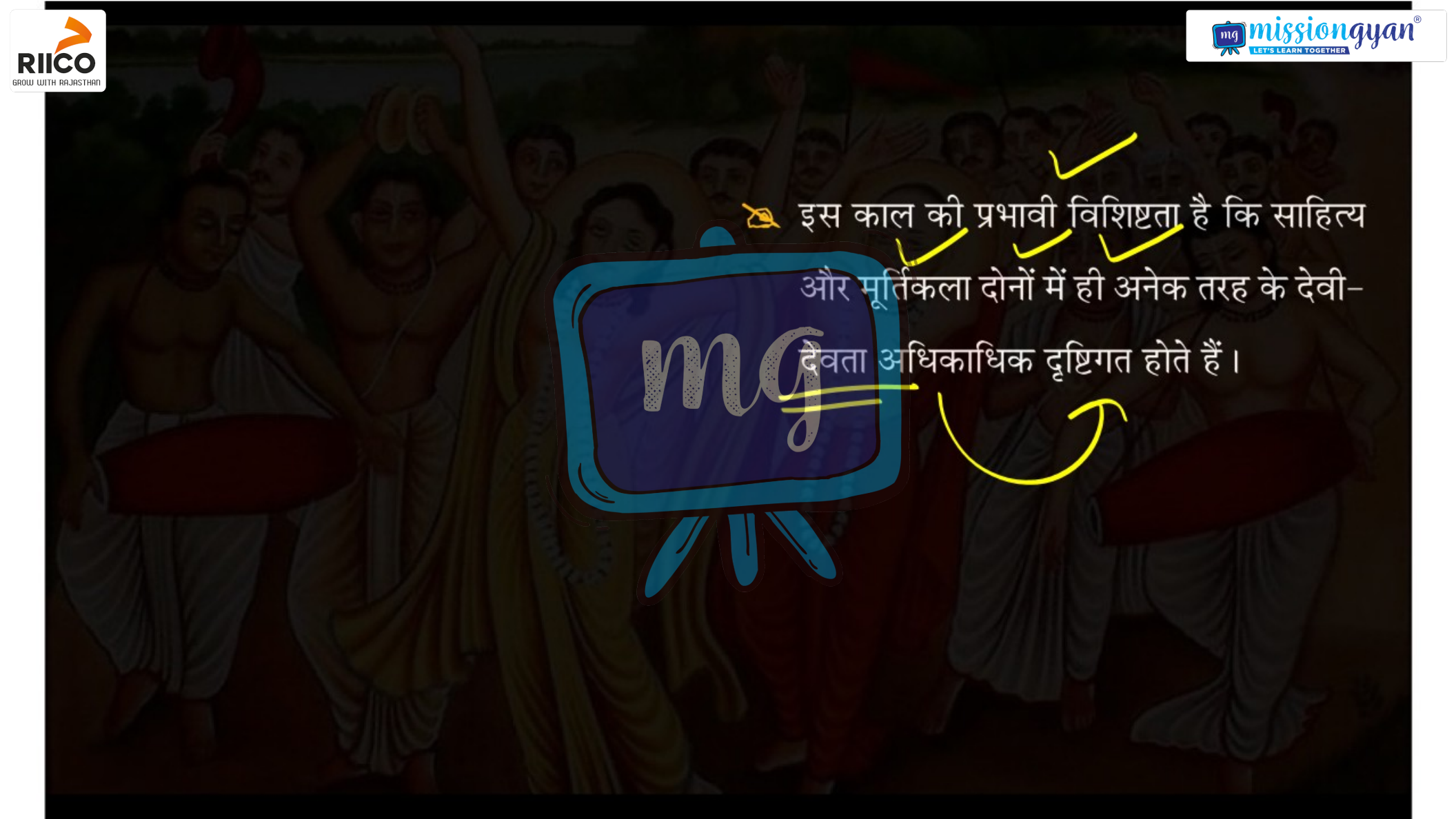

इस काल की प्रभावी विशिष्टता है कि साहित्य और मूर्तिकला दोनों में ही अनेक तरह के देवी-देवता अधिकाधिक दृष्टिगत होते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. सगुण और निर्गुण भक्ति क्या है?

Q. अलवार और नायनार संत कौन थे?

Q. महाराष्ट्र के भक्ति संतों के नाम लिखें?